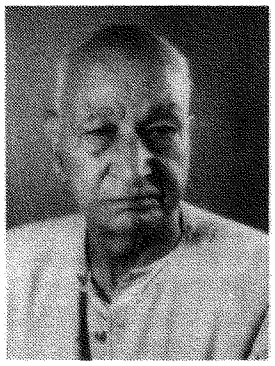

प्रो. रामनाथ शास्त्री
Professor Ram Nath Shastri

प्रो. रामनाथ शास्त्री, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपने सर्वोच्च सम्मान 'महत्तर सदस्यता' से विभूषित कर रही है, डोगरी नवजागरण के पुरोधा हैं। आप एक प्रतिष्ठित कवि, कथाकार, नाटककार, निबंधकार और शिक्षाशास्त्री हैं। डोगरी भाषा और साहित्य के विकास और समृद्धि के लिए आपने अकेले ही महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। लोगों तक पहुँचने और उन्हें अपनी मातृभाषा के गौरव की प्रतीति कराने के लिए आपने हर विधा का सफलतापूर्वक उपयोग किया।

प्रो. रामनाथ शास्त्री का जन्म 15 अप्रैल 1914 को जम्मूतवी में हुआ। आपने संस्कृत में स्नातकोत्तर और हिन्दी में प्रभाकर की उपाधि प्राप्त की। आपने 1938 में हाई स्कूल के अध्यापक के रूप में अपना कार्यजीवन शुरू किया, बाद में आप कॉलेज में व्याख्याता बने और 1970 में जम्मू-कश्मीर राज्य के शिक्षा विभाग से प्रोफ़ेसर के पद से सेवानिवृत्त हुए। जम्मू विश्वविद्यालय में आप 1970-1975 तक डोगरी के वरिष्ठ फ़ेलो रहे। 1977-1985 तक आपने जम्मू एवं कश्मीर सांस्कृतिक एकेडेमी की डोगरी-डोगरी कोश परियोजना में प्रधान संपादक के रूप में कार्य किया। आप उक्त एकेडेमी की प्रथम केन्द्रीय समिति और महासमिति तथा जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय की विद्या-परिषद के सदस्य रहे।

प्रो. शास्त्री ने अपने लेखन की शुरुआत हिन्दी कहानी और निबंध से की। बाद में आप डोगरी साहित्यिक आंदोलन के पुरोधा के रूप में उभरे। आपकी प्रकाशित कृतियों में *धरती दा रिन, बाबा जित्तो, बदनामी दी छां, झकदिआं किरण, तल्खियां, नमां ग्रां, कलमकार चरणसिंह, डुग्गर दे लोकनायक* और हिन्दी में दो विनिबंध शामिल हैं। *धरती दा रिन* में 35 वर्षों के दौरान लिखी गई आपकी कविताएँ संकलित हैं, जबकि *बदनामी दी छां* में छह कहानियाँ। *बाबा जित्तो* एक डोगरा नायक के जीवन पर आधारित डोगरी का पहला नाटक है, जिसे आपने स्वयं मंचित किया और उसमें अभिनय भी किया।

शास्त्री जी एक कुशल अनुवादक भी हैं। आपने छह उपनिषदों, भर्तृहरि के *नीतिशतक,* शूद्रक के *मृच्छकटिकम्,* भास

Professor Ram Nath Shastri, on whom Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today, is a father figure of Dogri renaissance. He is a celebrated poet, fiction writer, essayist, dramatist and educationist. Through his writings in the various genres he has succeeded in reaching out to the people and making fruitful efforts in using the Dogri language effectively and hence he is considered the founding father of modern Dogri literature. He has undoubtedly made a singularly significant contribution towards the development and advancement of Dogri language and literature.

Professor Ram Nath Shastri was born on 15 April 1914 at Jammu Tawi. He did post-graduation in Sanskrit and Prabhakar in Hindi. He started his career as a high school teacher. Later he became a college lecturer and in 1970, he retired as professor in the J & K State Education Department. From 1970 to 1975 he has been a Senior Fellow of Dogri in the University of Jammu. From 1977 to 1985 he served as the Chief Editor of the Dogri-Dogri Dictionary Project of J & K Cultural Academy. He has been a member of the first Central Committee and General Council of J & K Cultural Academy and the member of the Academic Council of Jammu & Kashmir University.

Professor Shastri began his literary career with the writing of Hindi short stories and essays. Later, he came out as the pioneer of Dogri literary movement. He has more than ten works in different genres to his credit like *Dharti Da Rin, Bawa Jitto, Badnami Di Chhan, Jhakdian Kiran, Talkhiyan, Naman Gran, Kalamkaar Charan Singh, Duggar de Loknayak* and two monographs in Hindi. Of these *Dharti Da Rin* is a collection of poems he wrote over a thirty-five year period. His *Bawa Jitto* was made into the very first play of the Dogri language, which he himself staged and also acted in.

He is also a prolific translator and has introduced to Dogri six Upanishads, a number of Classics such as Bhartrhari's *Neeti Shatak,* Shudraka's *Mricchakatikam,* four short plays of Bhasa, Rabindranath Tagore's *Gitanjali, Balidan, Malini* and *Dakghar,* Mahatma Gandhi's autobiogra-

के चार नाटकों, रवीन्द्रनाथ के *गीतांजलि, बलिदान, मालिनी* और *डाकघर,* महात्मा गाँधी की आत्मकथा, विनोबा भावे के *गीता प्रवचन,* चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की *रामायण* और धर्मवीर भारती के *अंधा युग* तथा गोर्की के *लोअर डेप्थ्स* के सफल अनुवाद कर डोगरी साहित्य को समृद्ध बनाया है। आपने *डोगरी-डोगरी कोश* का संपादन किया, जिसकी डोगरी भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। 1970 में डोगरी संस्था की रजत जयंती के उपलक्ष्य में आपने *रजत जयंती ग्रंथ* का संपादन किया, जिसमें डोगरा जीवन, कला, संस्कृति, साहित्य और इतिहास पर शोधपूर्ण लेख संकलित हैं। आपने डोगरी संस्था के सचिव के रूप में कार्य किया और इसकी साहित्यिक पत्रिका *नमी चेतना* के सम्पादक रहे।

अपनी साहित्यिक सेवाओं के लिए आपको कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। 1977 में डोगरी कहानी-संग्रह *बदनामी दी छां* के लिए आपको साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ग़ज़ल-संग्रह *तल्खियां* के लिए 1981 में और गद्य-कृति *डुग्गर दे लोकनायक* के लिए 1991 में आपको राज्य एकेडेमी पुरस्कार प्रदान किया गया। संस्कृत नाटक *मृच्छकटिकम्* के डोगरी अनुवाद *मित्ती दी गड्डी* के लिए 1989 में आपको साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आप भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त पद्मश्री (1990), श्री मुल्कराज सराफ़ पुरस्कार (1989) और जम्मू विश्वविद्यालय की मानद डी.लिट्. उपाधि (1994) से विभूषित हो चुके हैं। 1989 में राज्य एकेडेमी ने अपने 'मीट द इमीनेंट कंटेम्परेरी' कार्यक्रम में और आपके हीरक जयंती के अवसर पर आपको सम्मानित किया।

प्रसिद्ध डोगरी लेखिका श्रीमती पद्मा सचेदव के शब्दों में, "प्रो. रामनाथ शास्त्री डोगरी के भारतेन्दु हैं। डोगरी में लिखनेवालों के कारवाँ में कोई भी ऐसा नहीं है, जो उनसे प्रभावित न रहा हो। डोगरी का कोई अक्षर ऐसा नहीं है, जिस पर उनकी छाप न हो। डोगरी भाषा को उन्होंने अपने साथियों की मदद से उस वक़्त मलबे के नीचे से निकालकर लोगों तक पहुँचाया, जब डोगरी के विद्वान दूसरी भाषाओं में लिखते थे और शायद अपनी भाषा को साहित्य में पिरोने के योग्य नहीं समझते थे। अपने साथियों के साथ मिलकर 1944 की वसंत पंचमी के दिन उन्होंने डोगरी संस्था की स्थापना की। डोगरी क़लम के हर सिपाही ने पहिला दाख़िला इसी संस्था में लिया। डोगरी को पूर्णतया समर्पित प्रो. रामनाथ शास्त्री का व्यक्तित्व डोगरी के लिए एक पिता का आशीर्वाद है।"

डोगरी साहित्य को रूपाकार देने में उल्लेखनीय योगदान के लिए, जिसने डोगरी साहित्य के विकास का मार्ग प्रशस्त किया, साहित्य अकादेमी प्रो. रामनाथ शास्त्री को आज अपने सर्वोच्च सम्मान 'महत्तर सदस्यता' से विभूषित करती है।

phy, Vinoba Bhave's *Gita Pravachan*, C. Rajagopalachari's *Ramayana*, Dharamveer Bharati's *Andha Yug* and Gorki's *Lower Depths*. As Chief Editor in J & K Cultural Academy he edited the *Dogri-Dogri Dictionary* which is regarded as a monumental addition to the development of the Dogri language. In 1970, on the occasion of the Silver Jubilee Celebration of Dogri Sanstha, he edited the *Rajat Jayanti Granth* in which research-oriented articles on Dogra life, art, culture, literature and history were put together. He also edited the Dogri literary periodical *Nami Chetna* of the Sanstha. Besides, Professor Shastri has compiled and edited a large number of books which have proved to be milestones in the gradual growth of Dogri language and literature.

Professor Shastri is the recipient of the Sahitya Akademi Award in 1977 for his short story collection, *Badnami Di Chhan* and the State Academy Award twice—in 1981 for the collection of Dogri Ghazals *Talkhiyan* and in 1991 for his Dogri prose work, *Duggar De Lok Nayak*. He won the Sahitya Akademi Translation Prize in 1989 for the Dogri translation of the Sanskrit drama, *Mricchakatikam* as *Mitti Di Gaddi*.

The honours he received include the Saraf Award, 1989, the Padma Shree, 1990, D. Litt. (Honoris Causa) from University of Jammu, 1994, and others. The State Academy honored Professor Shastri in 1989 in a function "Meet the Eminent Contemporary." The Academy also celebrated his platinum jubilee in a big way in the same year.

Smt. Padma Sachdev, the eminent Dogri litterateur, says; "Professor Ram Nath Shastri is the Bharatendu Harishchandra of Dogri. There is not a single person who is writing in Dogri now who has not been influenced by him. Not a single word is there in Dogri on which his stamp has not been registered. With the help of his associates, he salvaged Dogri language from the cultural debris and presented it in a very much revived and refreshed state before the Dogra people. Earlier the Dogra writers were writing in other languages, perhaps taking Dogri to be a language not fit for literary composition. In 1944, on the day of Basant Panchami, along with a few friends, he established the Dogri Sanstha. Every upcoming writer in the Dogri language would first enroll himself in this Sanstha. Dogri is highly indebted to Professor Ram Nath Shastri, who is always giving it his paternal blessings."

It is on this versatile genius Professor Ram Nath Shastri, who played such an important role in giving shape to modern Dogri literature, that the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship, today.